बालभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – षष्ठ **दिनांक -14-10-2020**

विषय – हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज अव्यय या अविकारी शब्द के बारे में पुनः अध्ययन करेंगे।

अव्यय या अविकारी शब्द

अ + विकारी जिससे विकार (परिवर्तन) न हो।
अविकारी शब्द वे होते हैं जिनमें लिंग, वचन, कारक आदि के कारण परिवर्तन नहीं होता। इसी कारण इन शब्दों को 'अव्यय' भी कहा जाता है। अव्यय का शाब्दिक अर्थ है-जिसका कुछ भी व्यय न हो। यानी ऐसे शब्द जिनका वाक्य में प्रयोग होने पर रूप न बदले। अव्यय वे शब्द हैं जिसके वाक्य में प्रयोग होने पर लिंग, वचन, पुरुष, काले, वाच्य आदि के कारण इनमें कोई परिवर्तन नहीं होता है।
अव्यय के भेद - अव्यय चार प्रकार के होते हैं।
(क) क्रियाविशेषण
(ख) संबंधबोधक
(ग) समुच्चयबोधक
(घ) विस्मयादिबोधक

(क) क्रियाविशेषण - जो शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं, उन्हें क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे

- अक्षत धीरे-धीरे चल रहा है।
- उसने कम खाया।

यहाँ दिए गए वाक्यों में धीरे-धीरे शब्द अक्षत के चलने का ढंग (रीति) बता रहा है, तो कम शब्द कार्य की मात्रा (परिमाण) बता रहा है। अतः ये शब्द क्रिया की विशेषता बता रहे हैं। अतः

ये क्रियाविशेषण के उदाहरण हैं।
क्रियाविशेषण के निम्नलिखित चार भेद होते हैं।

1. कालवाचक क्रियाविशेषण
2. स्थानवाचक क्रियाविशेषण
3. परिमाण वाचक क्रियाविशेषण
4. रीतिवाचक क्रियाविशेषण

लिखकर याद करें।